

पुस्तक संख्या

3086

ASHA ARCHIVES

पुस्तक संख्या 3086

पुनश्चैव न भूय दीपयन्तु हि ब्रह्मानवम्या द्विना संप्राप्य दहा
मीषया गवनिता सा वल्लिका पातु व ॥ मा क्लेशा विपद
पदगगान् ग्रहायाव गान् वक्रैर्यस्य पुन न किन (॥) वक्र वि
वक्र कल्प ॥ देवा कृद पुनू दित मून हा गे गहं प्रहाव सार्य
दद्या रुव रुवर्गा (॥) य स वल्लिकाया ॥ यद्य पुना धि नूरा
सूदि क मनि निरा ये व क्वा गि नेरा ले ला क्क मा क्
य नी रुज द द क दृता दि द्य व मुट्ट ना डी ॥ वा मे का

[illegible]

वसुकी । यिउ ह्वा मि नु गु जाम म तम यग नू वि ४ व व
 (ग्न) व शु र्वा नो मि श्री सि दि ल श्री म हि म ग रु ल द स्त
 ल नू य प धा ना ॥ इ ग्ना धृ त्वा ध त्रि शी ति रु व न रु यः
 के मा दि यं द ए गार्ज ॥ इ त्वा धू मा रु दे ल्यं पु न न पि रु व
 नी व उ मृ यं व वी र ॥ इ त्वा र्ग न क वी र्ज ल म सि रुः
 ग व ती शु म्भ दे ल्यं नि रु म्भुं सि रु स्का त्वां ज य नी पु म्भु
 दि न वि धि रु द व ला के रु दाम्भे ॥ १२ १३ १४ १५ १६ १७ ॥

वा श्री याम रु नू पी व रु वि वि ध य ना नू उ वि का नि नू डी
 को मा नी रु हि का ना चि व रु म धू म र्द वे षू वी ग म य मा ना ॥
 वा ना ही वा द य नी प रू न न य रु रु न ए मा ना न थ नू डी ॥
 वा म्भु वा प ल श्री ह न ग ल स हि ग मा त ना व पू ना नू ॥
 इ ल्या दि यी वा व ता न १० ॥ सा रु का वि ज य ॥ न म स्तु त्वा वि
 का द वी न म स्तु त्वा य मा ग नी यं व न डा स्ति ता द
 वा ति ल्यं म धू न वा मि नी ॥ इ ल्या दि यू २४ ॥ १॥

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥
मिव निला कंठ नीला हिमालयः सारथी सारथी मवर्धुः सृष्टि क क
वनिता वास य रुक्मिणी सा । पूर्व या नूतन वली मरुद मस
कुजा खड्ग माया युधना. द्वौ द्वौ पी भद्रा वाचं अनिद न म
धनी पाहु मांड ग्रवली ॥ मध्य श्री उग्र वली कनक द्युतिव
नवा इन्द्राद भते खड्ग रुतादि गामु मदिष दं त्रिने
त्रका तीका दिर्गुं रुं मय मं काल ल श्री लक लेध रुड गी

म. रु. लि. सविन्दुः सिद्धस्त्वाव शि नली त्रिभुवन जननी
पाहु मांड ग्रवली ॥ मैवली ॥ यूर्ध्व का मरु ल

१ श्री स

अनेय क्षत्र संता सित्व मेव क्षत्र संमम ॥ तस्मा का न क्षत्रा वेन जगत्सं
यत्र मक्षत्री ॥ अनेत्र शरणां ता सित्व मेव शरणां मम तस्मा का न
रा नावेन रक्ष माय रसे श्वरः ॥

। का म्वा रु व रु रु द दा रु कि दा म् कि दा व ॥ उं स
व म रु स म रु त्वा नि व स च्च थ सा धि क ॥ अ न (व्य श
म्व क (मि पि ता ना य लि न मा मु ने ॥ उं त्वं ग नि स व
रु ना ना त्वं ग नि त्वं य ना य ला त्व सा ह्ना त्वं य न ॥ अ
नि त्वं द वि ग न लं म म ॥ उं अ च्च उ ग न लं ना सि
त्व स व ग न लं म म ॥ क स्मा क्ता न ग ला व न न रु न रु
य न न व नि ॥ उं क र्मा ला म न सा वा वा. त्व ह्ना ना न्या ग

। न म म ॥ म रु ही नं कि या ही नं रु कि ही नं त (थे व वा
ज य ह ना र्व ना ही नं व लि वे व न थ प न ॥ न त्प र्व रु
म्य ना द वि म या ह्ना न न न रु न ॥ अ मु। क स रु लं
द वि रु या रु या न मा म्य हं ॥ य थ वा (न ति ॥ अ रु ग
धा दि ॥ ॥ अ च्च उ ग न लं म म ॥ अ न्य त्र श र्णा ना सि त्वं मे
व श र्णा

ॐ नमः श्री महादेव वायवी श्री देव वा वाय ॥ जय त्वं
मालिनी देवी. निर्मल मन नाभिनी ॥ हान भक्तिः
हृदये. वृद्धि त्वं मज्जवर्द्धनी ॥ जननी सर्व हृत्तानां
संसा न स्मिन्वावस्तिता ॥ माता वीरावनी देवी का नृप
कनू च त्वेन ॥ जय नियन मत त्व निर्वोच सै हृत्तित
जामयी निः हृत्त वाय क नृपा पना हान भक्ति त्वं

ॐ भक्ति या म ज्ञे ला मृश न खा मूत्र खा पून हृत्त
ना ॥ तु व त्वं तुला का नृपा ॥ पु नृत्ता द भक्ति मुसं
नी यम ॥ ला मूत्रा क्षा नि नृपा स्व नृपा जि वा ऊ हृत्त ना
मा व वा मा व नृदी मना क्षा म्बिका ॥ वि नृ नृपा व धू
ता हृत्त व त्वं हृत्तिका ला ॥ अ उ म का नृत्ता का नृत्ता
नृत्ता का नृत्ता सं या अ नृत्ता त्व मा य य नृत्ता त्व नृपा स्व नृ

याहगाकावस्कायिनी। अदितकाननगह्वाइवाथा
नित्रयावशीकलुसैमाहिनी। नुडमागानथानेकडा
कि० संसूअपुसूअमलाधिगनी। लानरु। नीनि
थीआत्मिका। लानरुनाहनाखा। वरुणी। जोकी
गसद्यानिकानुगहीठाकुवाधिना। तंमहासनसं
लानिनी। बाउठमनामृताविन्दुसंदाहनी। स्पंदद

हसुता। मयसंसाकयनानन्दनिर्वाणसोखपदरु
प्रवीहैप्रवाधानकीजानूठाकयनामाहिनीनुडमा
विननुडठाकि० खनीसिद्धिया। गंधवनीसिद्धिमा
ताविन्दु। हादनाहीनिया। न्यापुवी। वाग्विनुद्धा। मि
वासिद्धिवागीधवनी। माहकासित्वमिअक्रियासं
लासिद्धिरुत्री। विरुमिसंरुति। सूरुतिगर्ननि। माग्य

तीस्थातिर्त्तनायनी। नक्तवडा कलौ न स्वनाही =
मनूपा मद्राकुषायागपिया त्वं जयन्त्यार्जिनाभूड
संमादनी त्वं न वात्मान न्य दवस्य वात्सङ्गयानासुता
मनुमाग्नानुलोमोनिहिर्माह रिद्धीनवीनपानानु
नक्त ४४ नक्त ४४ संयुक्त ४४ दविपञ्चमस्तर्दिवापा
नात्सर्वं मूलक कालकावालिनी। ४४ कजन्म दिजन्म

मन्त्रः सर्वभूतहिते रते ।
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

अरु सुजावली जायि रिः साधक पूरु के स्मारे
रिर्मलुलदी किनेर्या गि रि र्या गिनी वन्दम ला
यके नूड की जान मे र्यु स। या गिनी या ग सि
दिपुद। दे वित्वे प प्रयु। यमे लो वने स्तह यूः
मुने यद्यसे नस्य दिव्या न निद्रु स्तिना सफ पात
ल सं खर नी सिद्धि न या द न वरु न। रु कि ता य

प १० दे यु के का कारं दि कारं रि कारं वरु प
प्रयु क वा र्ये शु विः सं सा न द्य स दामान व र्मा
यि वी ना मि ठा मु। पु व पर्व नो। गु पि र्म न द्र स। दे वि
प्रणानू ना स्म। हा स श्री पद। रु म वी ना न्य दाना नू म
का ठे व र्म प्र ण म दा दा म दू र्मा वि मू र्मा नि य वि
त्व दी य मू खं पू र्मु व दानू कारं। स्तु त्र दि य मा लि

स सत्कृत्तुला घृष्टगुलुत्तुयपिवद्वाहरेर्वन्ध
नेन्नीगया (ले) कुजावधुपादो गले म्पित्वं नाम संकी
रुनादविमूषुनि धात्रेर्महायाविधिहि । संसृः
पादानविन्दे दयान्कमहाकालिका लागिनेरुपरु
स्कन्द । गविन्दवुष्मन्तु वन्दार्कयूषाय धेमो लिमा
लासिसत्यप्रकिं दुस्करात्यिंजल । सर्ववीनामिर्क

हेववीर्वनरु । गनभोगगोर्दकम स्वापनाधं कम
स्वापनाधं । मेव । उर्व सुत्वा महादे विहे नर्व नमहा
स्मेना । गगो लिमं विनि र्दिय निर्घना यनमेवनी ।
यदक्रनय निजुष्टं मागोहीनं वय रुव । दानुमहसि
भदवि कस्यवे निव्यनं मनः ॥ ॥ निमालनीदुष्ट
कलेष्टं समाप ॥ ॥ उन्नमव्यतिु काये मंगीबूदा

वाय ॥ उं नमो भूगर्भमाय सूक्तं दह पनाय नम
 काकिनी विष्णुदात्मनादाश्वविन्दुमालिनी ॥ अदहा
 वसुमृत्युने अवनविश्वधात्रिणी ॥ महाकुलनी
 नित्यदंसमभ्यवस्तिने वशामसूर्याग्निमध्वरु
 यामवापीपनाय नम ॥ उं कानविग्रहावरुणका
 नाक्षरूपिणी ॥ बालाग्रहैर्गन्धसूक्तं अन्नन्ददा

[illegible]

प्रादमूलव्यवस्थिता ॥ ऐं सा व्यजननी देवी नमस्तुभ्य
किं नृपि ॥ ॐ तापि अलमधुस्तु मृत्वा लननु
पि ॥ विन्दु म (ध्व) गगाद वि कूटिला वा द्वा व दि
क ॥ तु वानि क निका शम् द्वाद ग्मा कावलस्विनी ॥ ३
मा द्वा द्वा न (गो) वि द्वाद ग्मा दित्यवर्चस ॥ पुन्यो
न्या न्ना वावस्ते द्वाद ग्मा स्थापना भानि वि ॥ तन्मा स्थप

नन्द
नमाद वि द्वादि (ध्व) रुन गमिनि ॥ नासा (ग्रु) सु मूः
ही (ध्व) म (ध्व) सुगु वाहिनी ॥ ३ ॥ स्थापन माद वि
नाल मू द्वि व्यवस्थिता ॥ नाद घट्टि कर्म घृष्ट गुणाष्ट
कर्म मन्त्रि ॥ सूत्र सू अत्र मं दू वृ धर्मा धर्म पूढ
दय कार्या कान्त कर्तुं त्वं रि गू नो नाद विगु द्वा पना
पन पद शुद्ध वेन न्या गोष्ठ नक्षु ॥ सर्व वलु धनी द

विंशत्युक्तं त्वं निविष्टं ॥ वाकिं मूलं महाव्यूहं विः
न्दुवीजं समन्विताम् । अथवा न महा माये सैसा ना पुव
तानि लि । यौके व विजया वैव जय नी वा प ना जिगा
उं वू वाज म अ ह न म सु या प मा व नी । व न्वः
मा क क नी दे वी । अउ अ न्ने द्य व स्ति न्ने । ह दि नी
वा किं मूलं न महाव्यूहं समन्विताम् ॥ अ म नि जि म वि

(मोने मा या य नु प वा ह नी । अ च्छ न्द रे न वी दे वी ।
सु क । श्री न म ह रे न वी ॥ य अ म ठ द र्जु नू प ह्ना । त्व या नू
डा पु की लि ना । अ म न्ना ख्ये नू नू ग्य लु न म । मा या
लि नी मि वे ॥ नू नू कि नी म हा मा ये न म सु ह्ना न रे न
वी । उ छु । त्क र वि शू जि के । ना व का कि रु या न न ।
न मा मि दे व दे व मि अ धा न धा न नू पि ती । अ लाम्

स्त्री वनवती उमा देवी नमो मुक्त ॥ यानि नीव श्रिया
देवी ॥ जे नीलश्री सनसुता ॥ हं ससुता द्वे के जे दे
वी ॥ जम मूखी मकि मोहिनी ॥ काष्ठा का गुरुमा देवी
इ ग्नी का ल्यायनी भिवा ॥ नित्य किं ना समाखाता ॥ न
काये का कनायना ॥ वाफ्री मोह भवनी च व कोमा
नीवे धूवी नथा ॥ वा ना ही वेव वौ मै ॥ मा इन्द्री

वामुता त्वे हयानना ॥ या ॥ गसित्व दिदव गि कु
लायक विरुषित ॥ इन्द्री वेव वु आ ॥ ग या ॥ याम्या न
जृल्य वा नूली ॥ नायवा वेव को व नी व्नी जम न गाम
दाहता ॥ यया गम व नूला काला अदहा को जय निक
॥ व त्रि शं कामु के वेव देवी को र्गु वा सु म ॥ अश्विना
ज नू नू इय नु का धे उ न्मरु रे नवा क लौ ली ही वरु म
नीये रया

स्वाव. संहारात्रयेव वा षष्ठ्या ॥ गथा काली उमा देवी द
वदुनी नमो भुग। हनु काली महादेवी वर्म मधु हया
वरा ॥ महाकुम्भ महाभक्त नमस्तु गकि नू पिपी लु
कुर्वेति स्था दान दया त्वं तु क नू षष्ठ ॥ हानाथि
ममहा मायु गदि कामि व दिनुं । यस्मि दं य ०
त स्मारेति संवेव मानव ॥ प्राप्ता नि विनि नानु का

मान् मी लं रु व ति व ल्लरु ॥ ॥ नू ति गिव ग कि स
मम मूर्त्ति महा मा या कृ व समा फा ॥ ॥ शु रं ॥ संहार २
॥ श्री सै व ली मधु ला न क कु म य द नि दि ता न न्दे वा
कि ॥ सही मा स्त मि न्या य व रु षं श्रु क ल क ल ग
नै य श्रु क वान्य ष ड् । च त्वा न १ य श्रु कान्य १ य
न न पि व रु न १ वा उ भा ह्वा वि (ग) मं द वा शी मूर्ति

मध्वरुसखरुलकलाविन्दूयथादमडा। वृद्धं
 कोमातैवालीयनमजिवकलावकुदवीकुमाना
 ग्रीवार्थवपुषुआनवनवकलिनं युग्मरुदंहुसा
 न। जेनत्वं सिद्धावतानं पथमकलियुगकोक
 वाधिकानं नस्यांवे पूरुतिं यानवयनूवकनं
 वृम। मन्त्रदृष्टे। सनानं गतपिण्डकमक

लसकलं वाउगानं कुमानं। आयुद्वमलुलंवेप
 निरुमविमलं पूषसहावठुन्दे। आदावसा
 दगानं कलकुमसकलं मलुलस्कानपूर्व। स
 स्कारनं निपुमयं यष्टुनरुयकपिण्डसिद्धि
 वा। मो। मध्वविष्णुमरुमिपुरुवमनूरुवंपुख्य
 स्वाधिकानं संहृष्टं यनगमीनमनहनुवनं = रु
 नवेष्टीकृऊर्गं ॥ यायादमिनि ॥ अनागति ॥ यथावा ॥

अनागतिमदि

~~अनमदस्य कृष्ण कायः ॥~~ ॥ ~~वन्द्यस्य~~ सकल
कोलिकसानुगतं कर्तुं ध्वनं नवकपालकद्वयमा
ली ~~सुद्धाङ्ग~~ स्वप्नवनरुटककाशहर्षदायस्त्रि
तयितुवनध्वनवन्नराया ॥ ~~सा~~ सनवदूक
त्राध्वनितिसिद्धः स्कन्दः सन्नात्रिजनकान

त्रधूमकयु ~~॥~~ गोत्री मृगः ~~॥~~ गकि समुद्रलगा
दधन ~~॥~~ पायात्प्रकवसनानिखिवादन
वटा ~~॥~~ सिद्धसप्तमदमूर्द्धितप्रककूर्मत्रिभि
त्यनाद्यनयथाध्वनदहलञ्जी ~~॥~~ दिष्टकध्वनः
मत्रमात्रकसाकृत् ~~॥~~ पायादयंगलपणिस

सकलार्थदाता ॥ ~~सुखी~~ नमो भगवते वासुदेवाय नमामि
 वृत्तिना नाथ वने नां नृक कृष्ण प्रसाद ॥ ~~सुखी~~ नमो
 था निखिम च नमो निज कृष्ण शुद्धिद वगुर्वकं स
 तर्गनमामि ॥ यस्तु कसामि निविमद मुसमान व
 सनिष्ठ न कलिनेय क उ व फ म ~~प्रा~~ मान न्य रे
 ववनवात्मक कृष्ण क गी त स्मै नमो भगवते

॥
 स नृजीयः ॥

सतर्गनिदाय ॥ ~~निखिम~~ नमामि भगवते नृपदिगदह
 नममका दिव्योद्यसिद्धि सकलानपिमानव
 धाना ~~सुखी~~ स कृष्ण वलपक उ व ल प म्भ सं पा
 स्यते निदग मलुत वा क ल श्री ॥ ~~संसा~~ नृध्या न
 विषना हि विद व उ ना संजीवनाय रु व न प
 निवृत्ति संतु ~~संसा~~ नृध्या न गी नि रं ग ख न द द य

मिद
 नृप
 मिद
 मिद

मंगलाख्यासा। एमेध्री साव इष्टं नंगव निवसुधमा
 हकावर्गमस्तु। सावाध्री सावत्री दीगुदगवनेमि
 तारोववीकृपयालासावेकानेकवृषाविविधगुह
 दयाभागिनीतान्ममामि॥०॥ खड्गवामनमिदि
 यवद्वयमिति॥०॥ माधवदेवि॥०॥ मन्त्रिकोमिति॥
 योनाकालमिति॥०॥ दक्षमिति॥०॥ य

मिवाग मृवीग किं वृत्तं वृत्तं ललितयनी वा
ग्यादिनी लेन वीही का ली रिप नो य नाप न
मा याक् मा वी ल सि ॥ ७ ॥ अथ म का मे नि ॥ ७ ॥
न म म ह न न दा य ति ॥ ७ ॥ य लु ली य हू मा र म
त्व म सि सू च त्रि त द क्षि ल त्व त्रि र ग मी र वा ता
द वी क ऊ गी रु व न जन नी य मि मा म्ना य म

ध्या । दर्शनातिथि सिद्धाय र व सि सु त रा मु ल
रा म्ना य दे वी मा ध्य ध्या ह । ट के शा त्रि भु व न
जन नी त्रै य रे शी ल मु र्दे ॥ ७ ॥ अथ न म म नुर हि
तं ध्या ति म्म य म ना कु लं सर्व व्या पी नि रा का
रं प रं व द्म न मा म्म हं ॥ ७ ॥ रत्ना म धी स क स ती
धं ज ले न पू र्णं च द य न न सु शो भि त मु ष्य षि

विषयः

यद्देवताजं मुनिभिः यस्य संहर्तृकम् मूर्तिमि
वगद्वि यत्नं नमामि ॥ साक्षात्सिन्दुवत्पुनः
वक्त्रं मन्त्रिणां श्रुतिं सिन्दुवत्पुनः साक्षात्
दध्यात्तु जगतीन् सिन्दुलंकविविन्दुका
षा लहस्यसिन्दुस्य मय्यमुपसकलज
यपदा सर्वसिद्धार्थका तीर्णता य ए जनी

या सकलरयहरीदं तुदये नमस्तु ॥ ० ॥
अमृतस्य मोक्षसी ॥ ० ॥ हंसीयुः कीर्तिं कालीति ॥
या गङ्गायामिति ॥ ० ॥ पतिवर्गिणी ॥ ० ॥ गङ्गापुत्र
अमिति ॥ ० ॥ कुर्यात्तुति ॥ ० ॥ वेष्टुवीणाकुंति ॥
या वदयति ॥ ० ॥ एकः सवनात्तु कवचः म
नतायः स हनुनामः महा मायाः मासिनीः

सर्वलो ॥ १ ॥ त्वमातंति ॥ दिवा वानं क मिति
अपनादति ॥ यथा मर्किय (७७) ॥ १ ॥ ॐ नि
शिवसि मना यथा ह्य विनतिक म्मा चेन
सा री र्म र्म ॥ ७ ॥ ॐ आशी कृष्णिका योति

नमु

रसले ० ले च व व दे १३ ॥ कृदिन ग्रा य र्म कृष्ण
.....

नन्दनसिवितं ॥ स्व द व ना य र्म कृष्ण
.....

रम कृष्ण सा सन लूम द म र्दि म र्वी व कृष्ण द म
दी फा व कृष्ण लूम द म र्दि म र्वी व कृष्ण द म
गम दिक ली म कृष्ण र्दि म र्वी व कृष्ण द म
कृष्ण र्दि म र्वी व कृष्ण द म

नाथानुमिह कृष्ण र्दि म र्वी व कृष्ण द म

यव धिनि कश्च यव नमः ॥
 तं नमः नोत्ता ॥ तं ज्ञानं तं ॥
 तं ॥ मानुषो य नवसेक
 पादिने नमः दीनाय पुर
 नाम नमः मतीभयथममस
 द्विपतं वरुषा दविर्भय
 धृष्टममममिनि नानुनमः ॥
 तं वृत्तं वृत्तं ॥ तं नमो वरु
 मम ॥ तं नमो वरु ॥ तं पाश
 दिमस्वाहा ॥ तं समस्वा
 दव्या ॥ तं नमो वरु ॥ तं
 ज्ञानं तं ॥ तं श्री गवने ॥ तं
 समितं ॥ तं नमो वरु ॥
 तं ज्ञानं तं ॥ तं स्वस्तिनः
 तं पयं वृषि ॥ तं विष्णो न ॥
 तं नमो वरु ॥ तं श्री गवने ॥
 ॥ तं नमो वरु ॥ तं नमो वरु ॥

तं पाश वरुनी ॥ तं नमो वरु
 तं ॥ तं नमो वरु ॥ तं
 मना दूति ॥ ॥ तं ॥

हनितांगीद विवासमी गदा कविन्द
 पडाव वरुनी नमो वरु ॥ तं नमो वरु
 देशानि वरु का वरु वरु पिला सुनमः
 मना दूति रजा मिसन गवने ॥ तं नमो
 जनिद नानु वरु नमो वरु नमो वरु
 तं वरु नमो वरु नमो वरु नमो वरु ॥
 तं वरु नमो वरु नमो वरु नमो वरु ॥

उं न कं गं स्य ॥ उं सु पथुमा
ऊं ॥ उं का च मि शु न्म ह्री
॥ विरक्तपत्रि पुत्र न सुदि
वी ॥ उं यो न्म आ ॥ उं न
मस्तु नूत ॥ उं नूत वस्तु
यद्द्विगन्धतु मांसा न द
तु नं रु वि ॥ उं वस्तु क
मा हं द धातु न ॥ उं का प्र
पत्रि मातु न ॥ उं सैव त
उं नूत वस्तु ॥ उं नूत य पु न
रुत्रिके म ॥ सुप्य न्मिस्तु
स्य न धातु त्सेव्य न्मिस्तु
व्य सु न्मानी ग्राम ॥ पु
मिस्तु कस्तु ला व क्तु क्तु
लो वा धातु न सो द क्तु व ॥

पसवा रुति ॥ यो नूत आ व
ध ॥ उं रुति क्तु न्मानी
मु न्मानी मूत य नूत यीदि
ध्या य न्मानी दस्तु क म मां
ऊं रु द धा ॥ उं नूत वस्तु ॥
ऊं नूत वस्तु ॥ उं नूत मिस्तु ॥
ऊं य नूत वस्तु ॥ उं नूत ॥
ऊं नूत वस्तु ॥ उं नूत वस्तु
व ॥ द वी स्म ना मि नि र्ण
दा र्थ न्मानी द्वा मि र्ण वि न्म
मा य मा द्वा मा न क्तु मूत म ॥
ऊं य प्र न धा ॥ उं नूत वस्तु
ऊं वि म्मा ॥ क म्मा ॥ उं न म ॥
व्यस्तु ॥ व्य य नि र्ण वस्तु वा
न म्मा न म्मा रु वा य नूत व
य नूत म ॥ सु वी य व प म्मा
प न्म य व न म्मा नी ल म्मा वा

५८
५९
६०
६१
६२
६३
६४
६५
६६
६७
६८
६९
७०
७१
७२
७३
७४
७५
७६
७७
७८
७९
८०
८१
८२
८३
८४
८५
८६
८७
८८
८९
९०
९१
९२
९३
९४
९५
९६
९७
९८
९९
१००

१ वषी कक

१ नमना वदन धन धन

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ सफमी कक

१ नक वदन धन धन

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

१ नयक नस्वान लोक वैधक

॥ बहुधा कृत्

॥ बहुधा कृत् बहुधा कृत्

॥ मलिस्थान लोकः सारग

॥ नीलको लोकस्थान आका

॥ दीनजाने विद्या यायस

॥ भगवन्तः यधूय निह

॥ आधलेना

॥ यायन मधु १८८ न

॥ लवृश म्वात कास माय

॥ नावृश दक्षिण

॥ ग्यालरेन न ग्यालरे

॥ यष्टुमीकृत्

॥ वीकमधन ईकुमवन्दन

॥ कोलास्थान लोकः सारग

॥ क्षायवस्थान आकासम

॥ शोभयात बु क

॥ मूकजाने विद्या नमान

॥ मास विदि मा गविहि

॥ म्वाकटा स्त्रीवमत्य

॥ स्वालोय मधु यकाने

॥ शल मऊ

॥ रुक्म दक्षिण सुवनि

॥ ग्यालरेन न ग्यालरे

॥ द्वितीयाकृष्ण

॥ श्रीस्वपुत्रेण श्रीस्वपुत्रेण

॥ शिवनस्वान्त्याक

॥ लुङ्गीस्वान्त्याक

॥ धन्याग धन्याग

॥ गङ्गाजानेय द्युयवादन

॥ सकम्पान्त्याक

॥ मूकविदि मूकविदि

॥ भागिदक्षिण मूकविदि

॥ गंगलयाला किरिनिमोह

॥ ददयनिमोह

॥ कपूनिधूयकथन

॥ भगश

॥ शिवना

॥ गङ्गलशन नास्व

॥ १० तीयाकृष्ण

॥ नकचदनवत

॥ नवका ० सवनमानलो

॥ हाकआएनाति आकास

॥ अगुनधूय कम्पान्त्याक

॥ गङ्गाजानेय विद्य

॥ गङ्गलशन

॥ हायाग नकपाग

॥ ममलशुयान जीवोन

॥ ००० मूत अगुकाय

॥ धूनदक्षिणयवाले

॥ गङ्गलशन नास्व

॥ ००० ००० पकान ॥ ३

पानं । पृथग्यति विग्रहः ॥ अ । यथा मय कदंबका
म्या म न न क वी न व न ह य क न व व । यो वि
प्राजाय जात न वा प्रयाजा निज न व व व न व
न क ड व न न न न न न न न न न न न न न न न
व स दी ॥

विग्रहः । विग्रहः । विग्रहः । विग्रहः । विग्रहः ।
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

सुति यदा कृत्तु म न स प
र ल ति सू न स्वा न न आ क स मा
र च य स्वा न त्वा क रै य क
(म न रा च न न च न ग ल ल व न
(म ली च त्वा ल की व ल
(ध ल ऊ न वा द्य पु मी द न
(च सा या न न न ल की मी र
(गं न न स या ति वृ क्त म
(यु नि सा ध य क्त न
(दौ क या नं ध नि र द धि
(क य ला
(ता नि स्था न मा नी क न क्त
(य वा वि दि अ न्न वि हि
(ल द दि ष म दि न व्य द हि
(म ल हं न न न ल

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २ ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ३ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ ४ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ ५ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ ६ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ ७ ॥
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥ ८ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ ९ ॥
 श्रीरामाय नमः ॥ १० ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ ११ ॥
 श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १२ ॥
 श्रीगणेशाय नमः ॥ १३ ॥
 श्रीविष्णवे नमः ॥ १४ ॥
 श्रीशिवाय नमः ॥ १५ ॥
 श्रीब्रह्माय नमः ॥ १६ ॥
 श्रीमहेश्वराय नमः ॥ १७ ॥
 श्रीनारायणाय नमः ॥ १८ ॥
 श्रीरामाय नमः ॥ १९ ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥ २० ॥

[illegible]

१ श्री ग (लक्ष्म) य नमः ॥ ग न ४ या लो दि उ य द ष व वि धि व श्रु ॥
 या न ह्यं तु लि पूर् व व य नु म धु स म नि र्नी ॥ नू उ व धु प म
 ना यं सै मा न मा न दा रु के ७ ॥ स्ना न ध व न ॥ या य उ मा (धा) ॥
 म ल व डी व धी नै क्ता गी हि ॥ नू द कि ल्प ॥ १ ॥ आ (प्र) य न क
 पा नू व स व द रु ग र्ग व न् ॥ उ व आ लै प स न्ना यं सि धि से
 वार्थ सा ध क ४ ॥ यै नि स्ना न उ व स (ध) लु क म्मा ल डी व धी ।

* * *
 अ नु नी धू पः वृ वा वी हि मू ति द कि ल्प ॥ २ ॥ या म्मा या वा
 मृ तै (प्र) षं वी म ह स्त ग र्ग व न् ॥ व (ल) आ व व स प्पी ता
 सि धि स र्वो दा य कं ॥ स्ना न स ह च न व ना म रः लु लु डी
 व धी श्री ख लु धू पः मू क्ता वी हि पु न द कि ल्प ॥ ३ ॥
 नै म्मा ल क्ता न प र्ग वं गु उ यं क स म नि र्नी ॥ व लु ना ६
 यि का पी ष र्थ व न द ह्वा रु या व ह ॥ या ल य न स्ना न

नमः (अ) मधुय मनि ओषधीः जंजन जंगुलि धूपमा
नमो हिः लावक दक्षिणा ॥ ४ ॥ वानू (अ) कीन पार्श्व व
संययाद वनूः स रु ॥ व (अ) देवो वसु पी नैः (अ) क सं ना
यना ठान ॥ कृष्ण वृत्तान्त्वा लप मरुः व क वन्दन क
ट विषली गुठ गु डोषधीः सन ह्रास धूप मासवी हि
सूठिक दक्षिणा ॥ ५ ॥ गायत्री नन्दु नादकैः वाम पा

दगर्ग वनू ४ ॥ व (अ) वनी व (अ) पीत्यर्थं संसात्र सादा रु व
॥ काष्ठ वृत्तान्त्वा इष्टुलि लिमट सिन्दु न च न पुयं गु
धूप वृष्टमील सिपा डोषधीः कठगुलि वीहि गीस्व
दक्षिणा ॥ ६ ॥ उरु न मधु पाशै व उ न ह्र दय वनूः ॥
व (अ) नू पागर्ग पीति सर्वार्थ सिद्धि दायक ॥ पद्म स्नानः
यल प्लिम रु न सांजन गम लावन वन्दनः कृ कृ मधूप

डोषधी पातक वर्ग लावन कूल नृवीहिः सिद्धलद क्रिः
 ल ॥ १ ॥ श्रीमान ग (श्रीद के) ग्रंथ चारुययथां न न व नृं ॥
 अनिवृत्ति महावीति ल श्रीमं न निवर्द्धन ॥ निगूति स्नान ॥
 सामरु कर्कटा सि डोषधी गु गु लिधूप न का खीहिः डो डो
 द क्रि ल ॥ ८ ॥ म (श्रियि नृ न सी पावै प नृ सर्वा म द रु के ॥
 उग्र व नृ ग नै पीति म स्नान स्नान दारु वे ॥ म दान स्नान ल

८४

(रुवा माटे रूप क ल डोषधी खीहि सर्वग सिद्धा स धूप
 कूल द क्रि ल ॥ ९ ॥ नृ ति उ य दा स ल विधि ॥ ॥ ॥
 न मा द वी ॥ इ नृ र्च नै प व श्र मि प य म्य गु नृ ल स्त नै य न
 स्नान मा प ल ॥ नृ नृ ना ग विना ग नै ॥ म स्त ल गु नृ द व र्क का
 य वि (मा ध य रु न ॥ म नृ ल म नृ ल थ लि स य प प
 नृ ॥ लि लि ला य रु य म्मा नि नृ सा व नृ पि ली मि (श्र

वा ६ ॥ कृष्णकान्तस्य संकल्पिका ॥ मन्त्रिका ॥ वा ६
कोलकल्पिका यां तु संलिखे ॥ प्रजयतु नमो ॥ अस्मिन् ॥ इन्द्रो
दवीमहं वनी ॥ न गोदला न्यथा विवृणक्तव ॥ अतिमं लि
खे ॥ प्रजयतु स्य संलिखे ॥ नूतन ॥ अदित ॥ कुमा ॥ न गो
दला निवासी ॥ अतः व ॥ संलिखे ॥ कावता ॥ ह्यपु
षु प्रजयतु यथा कर्म ॥ अ ॥ कर्तुं स प्रष्टु ॥ व ॥ का ॥ गू ॥ य ॥

कोलकी ॥ श्रीगणेशविघ्ननाथं नमस्कृत्य यागिनीं तथा ॥ वा ६
मन्त्री वा युको ॥ वा ६ ॥ प्रजयतु यथा कर्म ॥ न गोदला न्यथा विवृणक्तव
मुनेयं लिखे ॥ न गोदला न्यथा विवृणक्तव ॥ अतः व ॥ संलिखे ॥ कावता ॥ ह्यपु
षु प्रजयतु यथा कर्म ॥ अ ॥ कर्तुं स प्रष्टु ॥ व ॥ का ॥ गू ॥ य ॥
गो ॥ अतः व ॥ संलिखे ॥ कावता ॥ ह्यपु
षु प्रजयतु यथा कर्म ॥ अ ॥ कर्तुं स प्रष्टु ॥ व ॥ का ॥ गू ॥ य ॥
मन्त्री वा युको ॥ वा ६ ॥ प्रजयतु यथा कर्म ॥ न गोदला न्यथा विवृणक्तव
मुनेयं लिखे ॥ न गोदला न्यथा विवृणक्तव ॥ अतः व ॥ संलिखे ॥ कावता ॥ ह्यपु
षु प्रजयतु यथा कर्म ॥ अ ॥ कर्तुं स प्रष्टु ॥ व ॥ का ॥ गू ॥ य ॥
गो ॥ अतः व ॥ संलिखे ॥ कावता ॥ ह्यपु
षु प्रजयतु यथा कर्म ॥ अ ॥ कर्तुं स प्रष्टु ॥ व ॥ का ॥ गू ॥ य ॥
मन्त्री वा युको ॥ वा ६ ॥ प्रजयतु यथा कर्म ॥ न गोदला न्यथा विवृणक्तव
मुनेयं लिखे ॥ न गोदला न्यथा विवृणक्तव ॥ अतः व ॥ संलिखे ॥ कावता ॥ ह्यपु
षु प्रजयतु यथा कर्म ॥ अ ॥ कर्तुं स प्रष्टु ॥ व ॥ का ॥ गू ॥ य ॥

उलजयं कृत्वा विधानतः ॥ १॥ सुखं वदन्ती ॥ १०॥ न. सा वयं जंग
दीप्यन्ती ॥ वन्दे वन्दनकास्मीन कस्तुनी उद्यलपितः ॥ वा
मदवीसमायुक्तं लिखेत्स्वर्गसत्ताकया ॥ उद्यन्तं लिखितं
उक्तं स्वस्ववीजं न संयुक्तं ॥ मध्यमिन्दुन संयुक्तं पूजयत्य
नमस्यन्ती ॥ महागर्भे सुयोगेन लब्धे पार्श्वे दुर्गैः ॥
वभगवत्सदमलिना कर्णैः नक्रैः सह ॥ जघाना मुक्ता
संप्रैः मूलैः नेवषदं कर्कशं ॥ जगद्गुणानां दिक्कृत्वा यानि म

प्राचदगर्भे ॥ ७॥ सुखं ॥ १॥ सुखं प ॥ १०॥ सुखं (गुणि ॥
गम्यन्ती ॥ पूर्णं कस्तुनीं गगनं निरुतन्तं कर्णैः यानि तीक्ष्णं वा
मृगं ॥ उद्यन्तं विप्रहर्षं गगनं ॥ १०॥ पूषा
द्याध्वयदीपा मिषमलिवल्लिहि ॥ १॥ दद्यात्स्वयामि चक्रं
भूषणं कान्तिं विनिर्मुक्तं ॥ १॥ नृकिं मुक्तिं ददातु ॥ १॥
गवदं कर्णैः गगनं विप्रहर्षं ॥ १॥ संप्रैः विधिव
हृत्स्वामि च विद्वत्कैः ॥ १॥ यस्तु सा निधीति ॥ नमो

[illegible]

सायुधधनावदिनसूरुम्हा. कल्याणमाददकु देहविना
कोनी ॥ ॐ स्वादिह ॥ दय्यात्रु (धवित्रु) कननूष महिषं ख
लु कवउ मु (उ) नीन केन के वीज समनउ विगते शु मुद
वमु निउमु ॥ शु मु मीप्रमवीन उजवल दलिम नन्दि केद
ववृन्द इ (न) इ ग्री कि इ नी एवमु समसदा सैयया मकदा
गी ॥ या सु म्या मधिपासिगारु गवनी नूडपव आदि हि
ब्रह्माणी पु मूखा जयादि सकला सद्यानिनी मणिमा ॥